International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 6 Issue 12||December. 2017 || PP.90-94

लम्बी कविता स्वरूप विष्लेषण एवं अन्य कविताओं से सम्बन्ध

डॉ० मनोज कुमार शर्मा
जेनेसिस ग्लोबल स्कूल सेक्टर 132 नोएडा, उत्तर प्रदेश

''नहीं होती, कहीं भी खत्म कविता नहीं होती

कि वह आवेग त्वरित कालयात्री है।''1

मुक्तिबोध की लम्बी कविता 'चकमक की चिंगारियाँ' के अन्तिम भाग की यह दो पंक्तियाँ लम्बी कविताओं के विशिष्ट वैशिष्ट्य की अवधारणा को पुष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं। कविता को 'आवेग त्वरित काल यात्री' मानने वाला कवि कविता को बाकायदा समाप्त करने की रस्म निभा ही नहीं सकता।

प्रत्येक काव्यरूप अपने युग और समाज से प्रभावित होता है। जब भी समाज, परिस्थितियाँ और युगबोध परिवर्तित होते हैं, तब उस बदले हुए युगबोध की अभिव्यक्ति के लिए एक नए काव्य–माध्यम की तलाश कवि के लिए जरूरी हो जाती है। आधुनिक युग की बदलती परिस्थितियों में भी जीवन की सम्पूर्णता विराटता या भव्यता को चित्रित करने वाले, प्रबन्ध या प्रगति जैसे परम्परागत काव्य–विधान अप्रासंगिक हो गये हैं। बौद्धिकता प्रबल हो रही है। कवि के लिए जीवन की यथार्थवादी चेतना तथा युग–बोध प्रबल हो रहा था। कवि जीवन की विसंगतियों और विडंबनाओं को उघाड़ कर रख देना चाहता है, कविता का इतिहास संक्रमण के दौर से गुजर रहा था। ऐसे में कवि को तलाश थी ऐसे काव्य–माध्यम की जो उसकी बदलती संवेदनाओं को वहन कर सके। परम्परागत रूढ़ियों से मुक्त, नए काव्य–सत्य को वाणी दे सकें, आत्मगत भावों तथा वस्तुगत स्थितियों के परस्पर संघात से उभरते अंतर्विरोध को सशक्त अभिव्यक्ति दे सके। अभिव्यक्ति का यह स्वरूप उसको कविता के किसी बँधे बंधाये ढाँचे में नहीं ढाल सकता था। अभिव्यक्ति की इस समस्या से जूझते हुए ही कवि लम्बी कविता के रचना विधान की ओर मुड़ा।

''रचना–प्रक्रिया वस्तुतः एक खोज और ग्रहण का नाम है''2

''हम कह सकते हैं कि अपने व्यापक अनुभवों को वृहद फलक पर प्रस्तुत करने के लिए लम्बी कविता अपने अस्तित्त्व में आई है। समसामयिक जीवन सन्दर्भों में हमारा आज का सारा जीवन आ जाता है जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक स्थितियाँ तो होती ही हैं, धर्म, शिक्षा, कला–संस्कृति और अनेक भेद–विभेद सम्बन्धी स्थितियाँ भी होती हैं। लम्बी कविता से यह अपेक्षा की जाती है कि उसमें बाहरी जीवन का चित्रण हो, पर व्यक्ति के भीतर प्रवेश करके उसके दर्द की अभिव्यक्ति भी हो। इसके साथ ही यह देखना भी आवश्यक है कि उसमें अभिव्यक्ति की कलात्मकता का स्तर कितना प्रभावी है।''3

मूलतः लम्बी कविता की उत्पत्ति प्रबन्ध काव्य के विकल्प के रूप में हुई है। यह प्रबन्ध काव्य के विकल्प के रूप में किन्तु उससे भिन्न स्वरूप के साथ एक स्वतन्त्र विधा के रूप में आई। इस प्रकार– ''लम्बी कविता प्रबन्धात्मक काव्यरूपों के विकल्पस्वरूप उत्पन्न हुई विधा है जिसके पीछे आधुनिक युगीन स्थितियों की अनिवार्यता है इस अनिवार्यता के तहत लम्बी कविता प्रगति और प्रबन्ध से भिन्न विशिष्ट काव्य रूप है।''4

लम्बी कविता की परिभाषा के विषय में भी विद्वानों में अलग–अलग मान्यताएँ प्रचलित हैं यथा–

1. **हरिवंशराय बच्चन**: ''लम्बी कविता वह है जो लम्बी हो।''5
2. **राजीव सक्सेना**: ''आज की लम्बी कविता एक अनुभूति एक क्षणिक–भावावेग, एक संघटना खण्ड को उसके समस्त सन्दर्भों और सम्पूर्ण परिवेश से जोड़ने की प्रक्रिया में एक व्यापक और जटिल अनुभव को प्रतिफलित करती है।''6
3. **डा0 रामदरश मिश्र**: ''लम्बी कविता वह है जो लम्बी होने के साथ–साथ जीवन के कई घुमावदार मोड़ों से गुजरती हुई एक जटिल यथार्थ का बोध और अनुभूति उभारती हो। यह अपने सफल रूप में स्वतन्त्र ईकाई कही जा सकती है। असफल रूप में इसे छोटी कविताओं का फूहड़ विस्तार या द्विवेदीकालीन इतिवृत्तात्मक कविता की वशंज कह सकते हैं।''7

4. **डा0 परमानन्द श्रीवास्तवः** ''कविता में प्रबन्धात्मकता की कला कई मोड़ों से होकर उस काव्य–विधा तक पहुँची है, जिसे हम लम्बी कविता कहते हैं।''8

5. **डा0 रमेश कुन्तल मेघः** ''लम्बी कविताएँ एक सम्पूर्ण परिवेश और जटिल सन्दर्भों का आयतीकरण करती हैं। इसीलिए इनमें अनुभूति खण्डों का गड्ड–मड्ड काव्य–वस्तु में, कवि और व्यक्ति के, कवि और समाज के, द्वन्द्वों का साक्षात्कार कराता है।''9

डा0 नरेन्द्र मोहनः ''लम्बी कविताओं की अनिवार्य सृजनता के लिए बाध्य करने वाला प्रमुख तत्त्व सृजनात्मक तनाव ही है, यह सृजनात्मक तनाव विविध रूपों में, आयामों में आजकल के जीवन में व्याप्त रहता है। यह तनाव व्यक्ति और व्यक्ति के बीच का, संस्कृति, भाषा और राजनीतिक शक्तियों के बीच का तो है ही, बुनियादी तौर पर और सृजनात्मक स्तरों पर यह सामाजिक स्तरों से प्रेरित विचार और लहू के बीच के रिश्तों का तनाव है– एक क्रूर परिस्थिति में जिन्दा रह पाने की तीव्र बेचैनी, गहरी वेदना हर जोखिम उठाकर मानवीय प्रेम के धरातल को पुष्ट करते रहने की बलवती इच्छा से पैदा हुआ तनाव; तनाव की इन्हीं सन्दर्भों में, धरातलों, आयामों, रंगों और आशयों से निर्मित होती है लम्बी कविता। तनाव की इस विविध धर्मिता का नाम है लम्बी कविता, जो महज वैचारिकता से सध नहीं सकती, न कोरे संवेग, आवेग और उत्तेजना से निभ सकती है।''10

कविता के परिवर्तित नए स्वरूप के साथ आलोचकों के लिए भी इस नए रचना विधान को परिभाषित करना आवश्यक हो गया। सर्वप्रथम डा0 नरेन्द्र मोहन ने लम्बी कविता को आज के कवि के लिए एक जरूरी काव्य माध्यम के रूप में स्वीकार किया। वे मानते हैं कि आधुनिक जीवन की जटिल वास्तविकता ने ही कवियों को बाध्य किया कि वे क्लासिकल ढाँचे की जकड़न से मुक्त हों। डा0 रामदरश मिश्र के अनुसार लम्बी कविता का विशेष महत्व है। लम्बी कविता जहाँ एक ओर अपने मूर्त परिवेश को चित्रित करती है वहीं दूसरी ओर जिन्दगी के वर्त्तुल एवं संश्लिष्ट स्तरों को व्यापक रूप से अभिव्यक्ति प्रदान करती है। वास्तव में लम्बी कविता एक लय की अभिव्यक्ति नहीं है, वरन जिन्दगी की अनेक लयों की संश्लिष्ट लय है। कविता के केन्द्र में किसी भी विचार को उसके व्यापक परिप्रेक्ष्य के साथ प्रस्तुत करने की अनिवार्यता ही कवि को लम्बी कविता की ओर उन्मुख करती है।

सबसे पहले 'परिवर्तन' कविता में बिना किसी कथा के आग्रह के कवि परिवर्तन की पूरी प्रक्रिया और स्वरूप को विभिन्न बिम्बों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। यद्यपि इस कविता में 'दीर्घकालिक सृजनात्मक तनाव' जैसे वे तत्त्व नहीं हैं जो बाद में लम्बी कविता के पहचान बिन्दु बने। लेकिन यहाँ सभी बिंब परिवर्तन के केन्द्रीय विचार से जुड़े हुए हैं। एक ही विचार बिन्दु से फैलने वाली यह एक महत्वपूर्ण लम्बी कविता है। इसी क्रम में यदि 'प्रलय की छाया' को देखें तो वहाँ यद्यपि कथा का आश्रय लेने के कारण प्रबन्ध विधान का आभास होता है लेकिन कहीं भी कविता प्रबन्ध के परम्परागत ढाँचे को पूरी तरह नहीं अपनाती। इस कविता की विशिष्टता है इसकी लय संयोजना। कहीं–कहीं कविता की लय भी गीतात्मक पद्धति के अनुकूल लगती है किन्तु पूरी कविता की परिकल्पना जिस नाटकीय विधान को सामने लाती है कवि जिस तरह छोटे–छोटे तनाव शिखर रचता है ये सभी तत्त्व इस कविता को लम्बी कविता के रचना–विधान को ही निकट रखते हैं। 'निराला' की 'राम की शक्ति पूजा' में लम्बी कविता की विशिष्टता की पहचान करने वाले तत्त्व अधिक स्पष्ट होकर सामने आते हैं। यहाँ युद्ध की वस्तुस्थिति में राम का अन्तःसंघर्ष, पूरी कविता में दीर्घकालिक सृजनात्मक तनाव की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करता है। कवि नाटकीय पद्धति से बिम्बों, विवरणों, आत्मालापों तथा पात्रगत संवादों के बीच संतुलन साधता है।

जब समकालीन कवि के पास अनुभवों की विषमता और गहराई आ जाती है और रचनाकार पर बाहर–भीतर के अत्यधिक दवाब पड़ते हैं जिनकी सम्यक अभिव्यक्ति छोटी कविता में नहीं हो पाती तो उनका अनुभावन लम्बी–कविता में उतर आता है। कहा जा सकता है कि अपने व्यापक अनुभवों को वृहद फलक पर प्रस्तुत करने के लिए ही लम्बी–कविता अपने अस्तित्त्व में आई हैं, जिसे अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। इसके माध्यम से उन अनुभव–खण्डों को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया जाता है जो सामान्यतः अन्य काव्य–रूपों में इस रूप में समाहित नहीं हो सकते।

लम्बी कविताः रचना–विधान एवं संरचनात्मक तत्त्व

लम्बी कविताओं के रचना–विधान के संबंध में कई प्रकार की परस्पर विरोधी मान्याताएँ प्रचलित हैं। क्या कविता का लंबायमान होना लम्बी कविता के लिए पर्याप्त है? केवल लंबाई में फैली हुई और प्रदीर्घ दिखने वाली कविता प्रगीत भी हो सकती है। लम्बी कविता बनाने वाली कोई केन्द्रीय स्थिति ही होती है, जिसके इर्द–गिर्द संदर्भ, प्रसंग और अनुस्पंदन उभरते रहते हैं। कई बार छोटी कविताओं को एक क्रम में रखकर फैला दिया जाता है और इस ढंग की प्रदीर्घता के आधार पर इसे लम्बी कविता कर दिया जाता है। ऐसा करना कहाँ तक उचित है? छोटी कविताओं की क्रमबद्धता और परस्पर संबद्धता के बल पर लम्बी कविता का विधान करने वाली युक्तियाँ, सामान्यतः लम्बी कविता की प्रकृति और रूपविधान के अनुकूल नहीं है। हाँ, यह उस हालत में लम्बी कविता का एक रचनारूप हो सकता है जब इस क्रमबद्धता और सम्बद्धता को सृजनात्मक धरातल पर अंतगृथित करने वाला कोई केन्द्रीय व्यापार, विचार या बिम्ब हो।

लम्बी कविता के रचना विधान में कुछ अनिवार्य तत्त्वों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ये तत्त्व ही परस्पर मिलकर लम्बी कविता का स्वरूप तैयार करते हैं। लम्बी कविता भावात्मक आवेश की क्षणिक अभिव्यक्ति नहीं होती अपितु यह लम्बी पीड़ादायक संघर्षपूर्ण मानसिकता में रूप लेता हुआ काव्य विधान है। इसके रचना विधान में जो तत्त्व सहायक होते हैं वह हैं–

1. अन्विति,
2. नाटकीयता,
3. प्रदीर्घता,
4. विचार तत्त्व,
5. सृजनात्मक तनाव, और
6. अन्तहीन अन्त।

अन्विति लम्बी कविता की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। लम्बी कविताएं बाह्य रूप से तो असम्बद्ध या विश्रृंखल दिखाई पड़ सकती हैं किन्तु आन्तरिक धरातल पर ये तथ्यों, कथात्मक अंशों, प्रसंगों और संदर्भ संकेतों को गूँथकर एकसूत्रता में बाधें रखती है। आधुनिक परिवेशगत जटिलताओं संश्लिष्टताओं के साथ बाह्य संघर्ष के साथ विभिन्न आयाम और आन्तरिक द्वन्द्व के अनेक स्तर पर इस कविता की रचना प्रक्रिया को जटिल बनाते हैं। लम्बी कविता का आधार विचार या बिम्ब पर निर्भर करता है। ''यह अनुमान किया जा सकता है कि लम्बी कविता का गठन जहाँ बिम्बात्मक हो वहाँ अन्विति और अखण्डित दिखे और जहाँ बिम्ब संकेन्द्रण पर आग्रह न होकर सन्दर्भों और प्रसंगों की सन्निधि और टकराव पर बल दिया गया हो, वहाँ अन्विति बिम्बात्मक और वैचारिक मिलते हैं। पहले प्रकार की अन्विति में सभी विवरण, सन्दर्भ और प्रसंग केन्द्रीय बिम्ब द्वारा संतुलित रहते हैं तो दूसरी अन्विति में किन्हीं विचार–सूत्रों से जुड़े बिम्बों का अनवरत क्रम।''11

लम्बी कविता विभिन्न अनुभव–खण्डों, व्यक्ति, समाज और राजनीति, मनोविज्ञान और इतिहास, मिथक और फैंटेसी, भूत, भविष्यत् और वर्तमान, धर्म और नीति राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज को अपने कथानक में समेट कर चलती है किन्तु उसमें ये सभी आयाम, स्थितियाँ, विषय कला ग्रथित होकर एक संवेदनात्मक उद्देश्य को प्रकट करते हैं। ''यह अनेकरूपता आन्तरिक अन्विति तभी प्राप्त कर पाती है जब किसी सर्जनात्मक सूत्र को पकड़कर गहरे शैल्पिक अनुशासन में उन्हें संगठित करता है। तब असम्बद्ध प्रसंगों–सन्दर्भों में भी एक सम्बद्धता दिखती है, अनेकरूपता में एक रूपता आ जाती है।'12

प्रगीत तथा छोटी कविताओं की अन्विति का मूल उद्देश्य एक ही भाव को बाँधकर रखना होता है। गीत भावावेशमयी अवस्था में केवल व्यक्ति विशेष की सीमा में रहता है। लम्बी कविता की वैचारिकता का सम्बन्ध सामाजिक यथार्थ से होता है। लम्बी कविताओं में वाह्य रूप (भाषा, छन्द, बिम्ब आदि) में विषमता दिखाई पड़ सकती है। परन्तु आन्तरिक रूप से यह अन्विति को तभी प्राप्त कर पाती है जब वह सभी विवरणों तथा प्रसंगों के केन्द्रीय सूत्र या विचार द्वारा संतुलित या संगठित करती है।

लम्बी कविता में बिम्बात्मक एवं वैचारिक – दोनो प्रकार की अन्विति एक साथ रह सकती है इन दोनों प्रकार की अन्वितियों का परस्पर टकरावपूर्ण संयोजन लम्बी कविता की संरचना में एक संतुलित आधार तैयार करता है। इस तरह की दोनों संरचनाएं लम्बी कविता में देखी जा सकती हैं। प्रथम स्थिति में प्रक्रिया, बिम्ब से शुरू होकर विचार की ओर बढ़ती है तथा दूसरी में विचार से शुरू होकर बिम्ब की ओर। यह प्रक्रिया विचार से विचार या बिम्ब से बिम्ब की ओर भी हो सकती है। जहाँ तक हिन्दी में रचित लम्बी कविताओं की बात है दोनों प्रकार की अन्विति वाली लम्बी कविताएँ हिन्दी साहित्य में उपलब्ध होती हैं। मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' संवेदना को बिम्बों, प्रतीकों आदि में परिवर्तित कर वैचारिक अन्विति प्रदान की गई है। निराला कृत 'राम की शक्ति पूजा' में आख्यान द्वारा ही सर्जनात्मक तनाव को बिम्बात्मक रूप प्रदान किया गया है। अज्ञेय अपनी कविता 'असाध्यवीणा' में आख्यान से शुरू होकर बिम्ब की ओर अग्रसर होते हैं। तथा राजकमल चौधरी द्वारा अपनी कविता 'मुक्ति प्रसंग' में सर्जनात्मक तनाव को केन्द्रीय बिम्ब–प्रतीक द्वारा संतुलन प्रदान किया गया है। धूमिल ने अपनी कविता 'पटकथा' में रूपक द्वारा प्रसंगों, कथा–सन्दर्भों एवं काव्य को एक विचार सूत्र में बाँधकर एक अन्विति प्रदान की है, किन्तु आख्यान इस कविता पर हावी नहीं होने पाता। अपितु भावों की टकराहट कमला के मन का अर्न्तद्वन्द–कविता को आकार देती चलती है। 'वह एक संध्या थी' पंक्ति की आवृति इस कविता में अनेक वार होती है। किन्तु इसके कारण उसके पूर्व और उत्तर में नई स्थितियाँ और टकराहटें होती हैं कविता की लयात्मकता इसे अराजक होने से बचाती हैं। भाग्य की विडम्बना कमला के सन्दर्भ में लय और विधायक टेक इसमें अन्विति बनाए रखते हैं। इस प्रकार अन्विति लम्बी कविता का अनिवार्य तत्त्व है इसके अभाव में लम्बी कविता का स्वरूप सम्भव नहीं है।

डा0 बल्देव वंशी के अनुसार कविता में विचार तत्त्व की मौजूदगी को पाँच विशेष अवस्थाओं, चारित्रिक गुणों में बाँटकर देखा जा सकता है। लम्बी कविताओं में इन तात्विक गुणों का दखल और भी गहरा एवं अनिवार्य होकर उभरा है। ये अवस्थाएँ निम्नलिखित हैं–

1. **परिज्ञानः** संक्षेप में वस्तुस्थिति का वह व्यापक पूर्ण ज्ञान ही परिज्ञान है जिसमें कविता मानसिक क्षमताओं–स्मृति, कल्पना, अनुभव संवदेना आदि का देशकाल की शर्तों पर प्रत्यक्षीकरण किया जाता है।
2. **अनुचिन्तनः** प्रत्यक्षीकरण में बाहरी संवेदना–प्रक्रिया अधिक मुखर रहती है तो अनुचिन्तन में व्यक्ति के भीतरी पक्ष भी अधिक सक्रिय हो उठते हैं तथा तनाव की दिशा में प्रभावी कार्य करते हैं।
3. **द्वन्द्वात्मक तनावः** युग की स्थितियाँ–सम्बन्धों, व्यवहारों की स्वाभाविक परिणतियों के कारण भी आज के व्यक्ति की मानसिकता द्वन्द्वपूर्ण है। यह द्वन्द्व और इसके कारण उत्पन्न तनाव आज के व्यक्ति की नियति बन गया है।
4. **निष्कर्षात्मक प्रकृतिः** विचार की प्रकृति निष्कर्षात्मक होती है किन्हीं निर्णयों या निष्कर्षों से विहीन विचार की कल्पना काव्य में आज सम्भव नहीं है।
5. **संवेदनात्मक उद्देश्यः** प्रत्येक कवि जाने–अनजाने किन्हीं हेतुओं से परिचालित होता है। इन हेतुओं को उसका कथ्यात्मक उद्देश्य कहा जा सकता है। विभिन्न काव्य तत्त्वों का विशिष्ट संयोजन संवेदनात्मक उद्देश्य में निहित होता है।

महाकाव्य और लम्बी कविता

महाकाव्य और लम्बी कविता के स्वरूप एवं रचना–प्रक्रिया में नितान्त भिन्नता है। महाकाव्य की कथावस्तु उत्पाद्य अथवा अनुत्पाद्य आधिकारिक तथा प्रासंगिक कथाओं से अनुस्यूत होता है। जीवन के समग्रता के साथ लौकिक वर्णनों में प्रकृति, नगर तथा वाटिका आदि के विस्तृत वर्णन से वह गति प्राप्त करता है। किन्तु लम्बी कविता युगीन सामाजिक सन्दर्भ, वर्तमान जीवन की जटिलता तथा बहुआयामी जीवनानुभव से कथ्य गढ़ती है। इनमें संवेदना वस्तु अथवा घटनाप्रधान नहीं होती। महाकाव्य में अनेक युगों की संचित जातीय अनुभूतियों, संवेदनाओं, सत्यों, दृष्टिकोणों तथा संघर्षों का विराट रेखांकन होता है। महाकाव्य में स्वच्छन्द भावों का प्रवाह–नैरन्तर्य दिखाई पड़ता है। लम्बी कविता में समसामयिक युग सत्य को उसकी सम्पूर्णता, संश्लिष्टता और नाटकीयता में पकड़ने की बड़ी कोशिश होती है। महाकाव्य में स्वछन्द भावों का प्रवाह में नैरन्तर्य दिखाई पड़ता है किन्तु लम्बी कविता में ऐसा नहीं है। वह ज्ञानात्मक संवेदन और संवेदनात्मक ज्ञान के घात–प्रतिघात को उद्घाटित करती है और वैविध्यपूर्ण, स्वछन्दशील और यथार्थ–बोध के दबाब से सहज रूप में प्रस्फुटित होती है। महाकाव्य के कथानक में धर्म, दर्शन, नीति, भक्ति, उपदेश आदि तत्त्वों का भी समावेश किया जाता है। लम्बी कविता में ऐसा सम्भव नहीं हो पाता, क्योंकि इनके समावेश से आधारगत विचार या बिम्ब गहराने की अपेक्षा टूटने बिखरने लगते हैं। महाकाव्य में कल्पना तथा पारलौकिक तत्त्व कथा–प्रवाह में सहायक होते हैं जबकि लम्बी कविता में गद्यात्मक व्याख्याएँ, स्वप्न और फंतासी की शैली तले मुक्त साहचर्य की पद्धति कथ्य को विस्तार देती है।

लम्बी कविता और छोटी कविता

लम्बी कविता और छोटी कविता के स्वरूप में भी काफी भिन्नता होती है। छोटी कविताओं का सौन्दर्य एवं शिल्प उनके किसी विशेष खण्ड या अंश में न होकर सम्पूर्ण में होता है। ''छोटी कविताएँ किसी एक खण्ड की संश्लिष्टता या सघनता और आन्तरिक संगति–विसंगति की चेतना से गुजरती है, अतः उनके शिल्प में भी अपेक्षाकृत एक समरूपता दिखाई पड़ती है। इसके विपरीत लम्बी कविता में अनेक खण्डों की मात्रा निहित रहती है। इन खण्डों की विशेषता यह है कि ये खण्ड परस्पर विरोधी और विषम होते हुए भी सन्दर्भ द्वारा एक सूत्रता में जुड़े होते

निष्कर्ष

इस तरह हम कह सकते हैं कि आधुनिक जीवन की जटिल वास्तविकता ने परम्परागत क्लासिकल काव्यरूपों की उपयोगिता और सार्थकता के सामने प्रश्नचिन्ह लगाया है। प्रबन्धात्मक ढांचा इसमें अपर्याप्त सिद्ध हुआ और कवियों को लगा कि भिन्न कथ्य और संवेदना के लिए नए फार्म की जरूरत है। लम्बी कविता की फार्म इसी जरूरत के तौर पर उतरकर सामने आई। आधुनिक जीवन की उलझी हुई परिस्थितियों और जटिल संवेदनाओं के संदर्भ में परम्परागत काव्य–माध्यम से पुराने रूपविधान में अभिव्यक्ति करना संभव न रहा। यह एक दिलचस्प उदाहरण है कि वास्तविकता के अनुरूप अपने सांचों में रद्दोबदल न कर सकने के कारण तथा अपने रूपतामक कलेवर में बंदी हो जाने से कोई काव्यरूप कैसे अपनी प्रासंगिकता खोकर बाँझ हो जाता है। अभिव्यक्ति की इस समस्या से जूझने के दौरान ही ऐसे काव्य–माध्यम की तलाश शुरू हुई जिसमें नए जीवन विधान की संगति हो और जो परम्परागत रूप विधान की रूढ़ियों से मुक्त भी हो, जिसमें नए सत्य के साक्षात्कार की क्षमता हो और जो आधुनिक परिस्थिति और संवेदना द्वारा पुष्ट और प्रमाणित हो। कहना ही होगा कि लम्बी कविता इन सभी अपेक्षाओं पर खरी उतरती है। लम्बी कविता ने उन सभी विविधताओं को अपने में समेटा है जो आज के युग की माँग हैं।

आज लम्बी कविता एक अनुभूति, क्षणिक भावावेग, एक संघटना खण्ड को उसके समस्त सन्दर्भों और सम्पूर्ण परिवेश से जोड़ने की प्रक्रिया में एक व्यापक और जटिल सन्दर्भों का आयतीकरण है। विभिन्न आयामों से गुजरती हुई यह व्यक्ति और व्यक्ति की बीच का, व्यक्ति और समाज के बीच का, संस्कृति, भाषा और राजनीतिक शक्तियों के बीच का तनाव है। तनाव की इस विविध–धर्मिता का नाम है लम्बी कविता। डा0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव के शब्दों में लम्बी कविता एक अशास्त्रीय अभिधान है और तद्नुरूप इसकी अर्थव्यंजना भी शास्त्रेतर अथवा शास्त्रातिशामिनी कही जा सकती है।

संदर्भ सूची

1- गजानन माधव 'मुक्तिबोध'– मुक्तिबोध ग्रन्थावली, भाग दो, पृ0 252.
2- मुक्तिबोध – नई कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबन्ध, पृ0 26.
3- डा0 रतन लाल शर्मा – समकालीन लम्बी कविताः समकालीन अनुभव और रचनात्मकता
4- डा0 बल्देव वंशी – आधुनिक हिन्दी कविता में विचार, पृ0 219.
5- डा0 हरिवंश राय बच्चन – पत्रिका मतान्तर, पृ0 26
6- राजीव सक्सेना – पत्रिका मतान्तर, पृ0 24.
7- रामदरश मिश्र – पत्रिका मतान्तर, पृ0 26.
8- डा0 रमेश कुन्तल मेघ – क्योंकि समय एक शब्द है, पृ0 48.
9- डा0 नरेन्द्र मोहन – विचार और लहू के बीच, पृ0 7.
10- डा0 बल्देव वंशी – आधुनिक हिन्दी कविता में विचार, पृ0 222.
11- डा0 नरेन्द्र मोहन – लम्बी कविताओं का रचना विधान पृष्ठ 3.
12- डा0 बल्देव जोशी – आधुनिक हिन्दी कविता में विचार पृ0 222.